लीलाधर जगूड़ी

स्वाद

कुछ लोग चीज़ें नहीं खाते
सिर्फ़ स्वाद खाते हैं

धीरे-धीरे वे भूल जाते हैं
स्वाद और चीज़ों के रिश्ते
उनके लिए स्वाद चीज़ों के अंतर्गत
चीज़ें स्वाद के अंतर्गत नहीं रह जातीं

कुछ लोग बेस्वाद चीज़ों से भरते हैं पेट
वे स्वाद नहीं खाते चीज़ें खाते हैं
वे जानते हैं
बेस्वाद चीज़ों में कैसे-कैसे स्वाद होते हैं।

लीलाधर जगूड़ी, बची हुई पृथ्वी
दिल्ली, राजकमल प्रकाशन 1991:108